दिनांक :- 14-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक आज़म (अतीथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

इकाई :- छः

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय चीन की क्रांति

चीन पूर्वी एशिया का एक विशाल देश है, अति प्राचीन काल में ही यहां के निवासियों ने कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान आदि में आश्चर्यजनक उपलब्धि प्राप्त कर ली थी। चीन का सम्राट ईश्वर तुल्य समझा जाता था और साम्राज्य स्वर्गीय साम्राज्य (celestial empaire) माना जाता था। चीन का इतिहास शांग वंश (1523-1027 ई० पू०) से शुरू हुआ।

इसके बाद चाऊ वंश (1027-256 ई० पू०) का काल आया जो चीनी सभ्यता का स्वर्णयुग सिद्ध हुआ। यह पूर्व में प्रशांत महासागर से लेकर पश्चिम में कैस्पियन सागर तक फैला गया। 590 को 618 ई० का शासन आरंभ हुआ। जिसने चीन को पुनः स्वर्णयुग में पहुंचा दिया। तांग वंश के पतन के साथ ही चीन में अराजकता छा गई। इस स्थिति में सुंग वंश का अविर्भाव हुआ जिसने 960 से 1297 ई० तक राज्य किया। 13वी शताब्दी में मंगोलों की शक्ति के समक्ष सुंग चीन को झुकना पड़ा। लेकिन एक शताब्दी के शासन के पश्चात मंगोल वंश का पतन हो गया। और चीन का शासन अन्तिम चीनी राजवंश मिंग (1368-1644) ई० के हाथ में चला गया। 17वी शताब्दी के मध्य में मिंग को पराजित करकर एक और विदेशी विजेता मंचू वंश ने चीन पर अधिकार कर लिया। 1911 ई० की चीनी क्रांति के फलस्वरूप इस वंश का पतन हो गया।

19वीं शताब्दी में चीन विदेशी साम्राज्यवाद का बुरी तरह शिकार हो गया। चीन के बटवारे के लिए यूरोपीय साम्राज्यवादी राज्यों में होड़ मच गई और देखते देखते चीन कई प्रभाव क्षेत्रों में बंट गया। कुशासन, निर्धनता एवं विदेशी प्रभाव से चीन के लोग तंग आ गए। उनमें राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न हुई और उन्होंने 1911ई० में क्रांति की। इसके निम्नलिखित कारण थे।

(1) राजनीतिक कारण - चीन में मंचू राजवंश (1644-1912) का शासन था। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में चीनी ने अपने को सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र माना है। और वह ईश्वरीय साम्राज्य के नाम से विख्यात था। किंतु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से चीन न तो विश्व सभ्यता का केन्द्र ही रहा और न अपने पैर पर खड़ा ही रह सका। वहाँ का मंचू राजवंश न तो विदेशियों को देश से बाहर भगा सका और न आन्तरिक

सुधार ही कर सका। 20वी शताब्दी के आरंभ मे चीन की जो दुर्दशा थी उसके लिए यहाँ कि निकम्मी सरकार बहुत जिम्मेदार थी। वस्तुतः विदेशी सम्पर्क उस समय आया जब अकाल -लूट मार तथा व्यापक अशांति तथा उपद्रवों के कारण आन्तरिक दशा खराब हो गई थी। आन्तरिक परिस्थितियों और बाहरी आक्रमण दोनो के लिए राजवंश दोषी था। दो अफीम युद्धों में पराजय के बाद चीन का सारा आत्माभिमान और गौरव चकनाचूर हो गया। चीन की शासन-व्यवस्था पूर्णतः विकृत हो गयी थी। पेकिंग की केन्द्रीय सरकार निर्बल थी और विभिन्न प्रान्तो पर इनका नाममात्र का नियंत्रण रह गया था। ऐसी स्थिति मे मंचू वंश का पतन अवश्यम्भावी हो गया।

(2) विदेशी शोषण - 19वीं शताब्दी के प्रथम भाग मे चीन का दरवाजा पश्चिमी साम्राज्यवादियों के लिए खुल गया। इंगलैंड, फ्रांस, रूस, अमेरिका, जापान आदि सभी के सभी चीनी

तरबूज (Chinese Mellon) को कतरने लगे। चीनियों ने इस का विरोध किया। मंचू सरकार ने विदेशियों को निकाल बाहर करने का कोई सफल प्रयास नहीं किया। यदि अफीम युद्धों में इसने भाग भी लिया तो असफलता ही हाथ लगी। चीन के कुछ देशभक्त अपने देश की दुर्दशा से बहुत चिन्तित थे। वे महसूस करने लगे कि विदेशियों को निकाल बाहर करने के लिए मंचू रोग वंश का उन्मूलन करना आवश्यक है। 1851 में तैपिंग विद्रोह (Taiping Rebellion) फूट पड़ा। विदेशियों की सहायता से सरकार ने इसे दबा दिया। इसी समय से मंचू राजवंश और विदेशियों का अपवित्र गठबंधन शुरू हुआ। विदेशियों की जालय और उनका शोषण बढ़ता गया। चीनी जनता का जीवन अत्यंत कष्टमय हो गया। 1899 में विदेशियों को चीन से धक्का मारकर

निकाल बाहर करने के लिए बॉक्सर-विद्रोह (Boxer Rebellion) हुआ। इसके मूल में चीनियों की विदेशी विरोधी भावना थी। तेपिंग विद्रोह की तरह इसे भी विदेशी सैनिकों की मदद से दबा दिया गया। परन्तु इस विद्रोह के परिणाम अत्यंत सुदूरगामी सिद्ध हुए। इसने निश्चित कर दिया कि चीनी जनता के सामने विदेशी शोषण से मुक्ति पाने के लिए क्रांति करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।

(3) सुधारों की असफलता - बॉक्सर-विद्रोह के बाद सुधार वादियों ने साम्राज्ञी त्जु-शी को कुछ सुधार योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए बाध्य किया। इसलिए सैनिक और शिक्षा के क्षेत्रों में कुछ सुधार लाए गए। सैन्य संगठन में कुछ सुधार किए गए। 1905 में चीन की पुरानी परीक्षा पद्धति का अन्त करने की आज्ञा जारी की गई और चीन शासनतंत्र को आधुनिक बनाने का प्रयत्न किया गया।

1908 में सम्राज्ञी का निधन हो गया और उसकी जगह मंचू राजकुमार फु-ची गद्दी पर बैठा। अपने साम्राज्ञी द्वारा प्रारंभ किए गए शासन-सुधारों को जारी रखा 1909 में उसके आदेशानुसार प्रांतों में विधान-सभाओं की स्थापना हुई। 1910 में सम्पूर्ण चीन के लिए पहली बार राष्ट्रीय महासभा की स्थापना की गई। इसमें उग्र वादियों का बहुमत था। जिन्होंने सुधारों की प्रबल माँग की। सुधारवादी चीन में संसदीय शासन और वैधानिक राजसत्ता चाहते थे। किंतु शासक वर्ग ने उनकी माँगों की उपेक्षा की और असंतोष को उभाड़ दिया। ऐसी हालत में क्रांति अवश्यम्भावी हो गई।

(5) जनसंख्या का दबाव और प्राकृतिक प्रकोप - चीन में जन संख्या की वृद्धि तेजी से हो रही थी। परिणाम स्वरूप जीवन निर्वाह साधनों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ गया।